International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(6): 234-239

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(6): 234-239
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-10-2023
Accepted: 30-11-2023

डॉ. बिपिन कुमार
ज्योतिर्विज्ञान लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. बिपिन कुमार
ज्योतिर्विज्ञान लखनऊ, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सूर्य तत्व विमर्श

डॉ. बिपिन कुमार

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2023.v9.i6d.2275

सारांश
सूर्य सृष्टि की आत्मा है कालपुरूष की आत्मा के रूप में भी सूर्य को स्वीकार किया गया है। ग्रहों के मंत्रिमण्डल में सूर्य को राजा कहा गया है। सांसारिक जीवन में भी राजयोग का कारक सूर्य को ही माना जाता है। आत्मा कर्माध्यक्ष है, कर्ता नहीं। जीव कर्ता भोक्ता है। जीव स्वकर्मवश सुख दुःख पाता है। "मैं करता हूँ"–ऐसा कहना उचित नहीं। कर्म ही कर्म को करा रहा है।

कूटशब्दः आदित्य, भाष्कर, रवि, मार्तण्ड, आत्मा, सृष्टि

प्रस्तावना
प्रस्तुत शोध पत्र में सूर्य ग्रह के विषय में शास्त्रीय विवेचना की गयी है वराहमिहिर, कल्याण वर्मा, मंत्रेश्वर महराज, नीलकंठ, भट्ट नारायण और अन्य प्राचीन ज्योतिर्विदो के विचार इसमें समाहित है और कतिपय नवीन शोध सन्दर्भ वर्णित किया गया है। नवीन शोध के अनुसार सूर्य कालपुरूष की आत्मा होने के कारण सांसारिक जीवन में आत्म तत्व का कारक होता है।
पृथुयशस ने होरासार में सूर्य के पर्याय बताया है।

आदित्ययेको रविर्भानुर्भास्कररच दिवाकरः।
मार्तण्डः सविता सूर्यत्वेक्षगांशुः स्वादिनो रविः ।।[1]

सूर्य व चन्द्र का स्वरूप–

मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तः प्रकृति सवितात्पकचः।[2]

सूर्य शहद के समान आँखों वाला, चौकोर शरीर, पित्त प्रधान प्रकृति तथा कम बालों वाला है।

स्वल्पाकुञ्चितमूर्धजः पटुमतिर्मुख्यस्वरूपस्वनो।
नात्युच्चो मधुपिङ्गचारुनयनः शूरः प्रचण्डः स्थिरः।।[3]
रक्तश्यामतनुर्निगूढचरणः पित्तास्थिसारो महान, गम्भीरश्चतुरस्रकः पृथुकरः कौसुम्भवासा रविः।।

थोड़े घुंघराले केश (वाल), सुन्दरबुद्धि व रूप, गम्भीर वाणी, अत्यन्त ऊँचा नहीं, सहत के समान लाल नेत्र, शूर, प्रतापी, स्थिर, (चञ्चल नहीं), लाल और कृष्ण वर्ण शरीर, छिपे हुए पैर, पित्त स्वभाव, हड्डियों में बल, बड़ा, गम्भोर चौखुंटा (लम्बाई चौड़ाई सम), विशाल किरण, केसर के रङ्गसदृश वस्त्र वाला सूर्य है ॥

पित्तास्थिसारोऽल्पकचश्च रक्तश्यामाकृतिः स्यान्मधुपिङ्गलाक्षः।
कौसुम्भवासाश्चतुरस्रदेहः शूरः प्रचण्डः पृथुबाहुरर्कः ॥[4]

सूर्य की प्रकृति पित्त प्रधान होती हैं। अस्थियां दृढ़ होती हैं, केश अल्प होते हैं । इसकी आकृति रक्त–श्याम (कुछ स्याही लिये हुए लाल) होती है। इसके नेत्र की पुतलियाँ शहद की तरह कुछ भूरापन और ललाई लिये हुए; इसकी आकृति चौकोर है; इसकी भुजायें विशाल हैं; यह लाल वस्त्र धारण किये

हुए है; स्वभाव से सूर्य शूर और प्रचण्ड है। सूर्य के स्वरूप का वर्णन करते हुए बैद्यनाथ जी कहते हैं–

प्रतापशाली चतुरस्रदेहः श्यामारुणाङ्गो मधुपिङ्गलाक्षः ।
पित्तात्मकः स्वल्पकचाभिरामो दिवाकरः सत्त्वगुणप्रधानः ।।[5]

सूर्य प्रतापशाली, चौकोर शरीर वाला, श्यामता लिए हुए ललाई वर्ण वाला, मधु पिगल (शहद के रंग की भूरी आँखें) दृष्टि वाला होता है। इसमें पित्त (दोष) अधिक होता है, केश थोड़े होते हैं। यह सत्त्वगुण प्रधान है।
कालिदास ने सूर्य से विचारणोय विषय बताया है–

आत्माशक्त्यतितीक्ष्णदुर्गसुबलाश्चोष्णप्रभावाग्नयः।
शैवोपासनधैर्य कष्टकतः राजाश्रयत्वं कटुः ।।[6]
वृद्धत्वं पशुदौष्टच भूपितृ रुचिज्ञानोदयव्योमदृक्
भीरूत्पन्नमनुष्यलोक चतुरश्रास्थिप्रतापास्तृणम् ।
कुक्ष्युत्साहवनायनाक्षिगिरिसञ्चाराश्चतुष्पान्नृपः सञ्चारो व्यवहारपित्ततपना
वृताकृतिनेंत्ररुक् ।।[7]
बेहो दारु मनः शुचिः सकलदेशाधीश्वरत्वं ह्यरुक्
सौराष्ट्राधिपतित्वभूषणशिरोव्याधिश्च मुक्ताः खपः ।
ह्रस्वः पूवदिगोशताम्ररुधिरे राज्यं च रक्तः पटः
पाषाणप्रकटप्रवर्तननदीतोरप्रवालाभिधाः ।।[8]

मध्याह्नप्रबलत्वपूर्ववदनः स्याद्दीर्घरोषो रिपु– ग्राहः सात्त्विकरक्तचन्दनपरत्वस्थूलतन्तू रवेः। उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड 26 सूर्य निम्नलिखित वस्तुओं का कारक है। आशय यह है कि सूर्य से उन वस्तुओं का विचार करना चाहिए–
आत्मा, शक्ति, तीक्ष्णता, दुर्ग (किला), अच्छा बल, गरमी, प्रभाव, अग्नि, शिव–पूजा, घेय, कांटेदार वृक्ष, राज्य का आश्रय, कटुता; बुढ़ापा, पशु, दुष्टता, भूमि, पिता, रुचि, ज्ञान, (आत्म साक्षात्कार); आकाश की ओर दृष्टि, डरपोक की सन्तान, मनुष्य लोक; चौकोर, हड्डी, प्रताप, तृण, पेट, उत्साह, वन, आधा वर्ष, आँख, वन में भ्रमण, चौपाया, राजा, यात्रा, व्यवहार, पित्त, तपना, वृत्त की आकृति, नेत्र की बीमारी, शरीर, लकड़ी, मन की पवित्रता, सकल देश पर शासन, रोग का अभाव, सौराष्ट्र देश का आधिपत्य, भूषण, सिर के रोग, मोती, आकाश का स्वामी, कद में छोटा, पूर्व दिशा का स्वामित्व, ताँबा, रक्त, राज्य, लाल कपड़ा, पत्थर, दिखलाकर काम करना, नदो का किनारा, मूंगा, मध्याह्न बली, पूर्व दिशा, दीर्घ समय तक का क्रोध, शत्रु का पकड़ना, सात्विक, लाल चन्दन, शत्रुता, मोटा शरीर। जो भी सूक्ष्म, पवित्र, मौलिक, आधारभूत, महान् मल्यवान् तत्त्व कहीं भी है वह सूर्य द्वारा कुण्डली में प्रतिनिधित्व प्राप्त करता है।
ताजिक ज्योतिष के विद्वान नीलकंठ जी ने सूर्य के स्वरूप का वर्णन किया है–

शनिविहङ्गोऽनिलवन्यसन्ध्याशूद्राङ्गनाधातुसमः स्थिरश्च।
क्रूर प्रतीची तुवरोऽतिवृद्धोत्तरक्षितोट् दीर्घसुनीललोहम् ।।[9]

शनि–पक्षी जातियों का मालिक, वायुप्रकृतिक, सन्ध्या समय बली बनचारी, शूद्रजाति पति, स्त्रोग्रह, वातपित्तकफ त्रिदोषकारक, स्थिर स्वभाव, अशुभ (पाप) ग्रह, पश्चिम दिशा का स्वामी, कर्मल रस का प्रिय, अत्यन्त वृद्ध, ऊपर भूमि का स्वामी, कद में लम्बा, अत्यन्त नीलवर्ण का है। और शनि ग्रह लौह धातु का स्वामी भी होता है।
सूर्य व चन्द्र का स्वरूप–

मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तः प्रकृति सविताल्पकचः।'[10]

सूर्य शहद के समान आँखों वाला, चौकोर शरीर, पित्त प्रधान प्रकृति तथा कम बालों वाला है।

स्वल्पाकुञ्चितमूर्धजः पटुमतिर्मुख्यस्वरूपस्वनो,
नात्युच्चो मधुपिङ्गचारुनयनः शूरः प्रचण्डः स्थिरः।
रक्तश्यामतनुर्निगूढचरणः पित्तास्थिसारो महान, गम्भीरश्चतुरस्रकः
पृथुकरः कौसुम्भवासा रविः ।।[11]

थोड़े घुंघराले केश (वाल), सुन्दरबुद्धि व रूप, गम्भीर वाणी, अत्यन्त ऊँचा नहीं, सहत के समान लाल नेत्र, शूर, प्रतापी, स्थिर, (चञ्चल नहीं), लाल और कृष्ण वर्ण शरीर, छिपे हुए पैर, पित्त स्वभाव, हड्डियों में बल, बड़ा, गम्भोर चौखुंटा (लम्बाई चौड़ाई सम), विशाल किरण, केसर के रङ्गसदृश वस्त्र वाला सूर्य है।

सूर्य के विषय

व्यालोर्णकरौ श्लसुवर्णशस्त्रविषदहनभेषजनृपाश्च।
म्लेच्छाब्धितारकान्तारकाष्ठमन्त्रप्रभुः सूर्यः ।।[12]

सर्प, ऊन, पर्वत, सुवर्ण, शस्त्र, विष (जहर), अग्नि, ओषधि, राजा, म्लेच्छ, समुद्र, तार (मोती वा रजत), वन, काष्ठ, और मन्त्र का स्वामी सूर्य है।

पित्तास्थिसारोऽल्पकचश्च रक्तश्यामाकृतिः स्यान्मधुपिङ्गलाक्षः।
कौसुभ्भवासाश्चतुरस्रदेहः शूरः प्रचण्डः पृथुबाहुरर्कः ।।[13]

सूर्य की प्रकृति पित्त प्रधान होती हैं। अस्थियां दृढ़ होती हैं, केश अल्प होते हैं। इसकी आकृति रक्त–श्याम (कुछ स्याही लिये हुए लाल) होती है। इसके नेत्र की पुतलियाँ शहद की तरह कुछ भूरापन और ललाई लिये हुए; इसकी आकृति चौकोर है; इसकी भुजायें विशाल हैं; यह लाल वस्त्र धारण किये हुए है; स्वभाव से सूर्य शूर और प्रचण्ड है। सूर्य के स्वरूप का वर्णन करते हुए बैद्यनाथ जी कहते हैं–

प्रतापशाली चतुरस्रदेहः श्यामारुणाङ्गो मधुपिङ्गलाक्षः ।
पित्तात्मकः स्वल्पकचाभिरामो दिवाकरः सत्त्वगुणप्रधानः ।।[14]

सूर्य प्रतापशाली, चौकोर शरीर वाला, श्यामता लिए हुए ललाई वर्ण वाला, मधु पिगल (शहद के रंग की भूरी आँखें) दृष्टि वाला होता है। इसमें पित्त (दोष) अधिक होता है, केश थोड़े होते हैं। यह सत्त्वगुण प्रधान है। ताजिक ज्योतिष के विद्वान नीलकण्ठ जी का मत है कि–

सूर्यो नृपो ना चतुरस्रमध्यं विनेन्द्रविक् स्वर्णचतुष्पदोषः।
सप्तर्ण स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिस्तु पित्तं जरम्पाटरुमूलयन्यः।।[15]

सूर्य ग्रह–प्राह्मणक्षत्रियादि वर्णव्यवस्था से क्षत्रिय जाति का पुरुष ग्रह है। चतुष्कोण (लम्बाई चौड़ाई तुल्य) है। दिन के मध्य में विशेष बली होता है। धातुओं में सुवर्ण का, दिशाओं में पूर्व दिशा का और पशुओं में चतुष्पद का स्वामी है। स्वभावतः क्रूर (पापग्रह) है। सत्यगुण प्रधान, स्थिर स्वभाव का, नीम, चिरायता, कुटज, जैसे पदार्यों के कहुये (तीते) रस का प्रिय है। भूमि तत्वप्रधान, गज अश्व पशुओं आदि का स्वामी, वातपित्तकफ त्रिदीयों में पित्त दोष प्रधान, अवस्था से वृद्ध, रूप में लाल रंग का या मूळ धात्वादि और कम्दों का अधिपति होते हुए वनचर वन में रहने वाला भी है।
श्रीमद्भागवत पञ्चमस्कन्ध अध्याय 20 का संबंध सूर्य से है। द्युलोक तथा भूलोक के बीच की संधि का नाम अन्तरिक्ष है– "अन्तरिक्षं तदुभयसंधितम्।" इस संधि के मध्यभाग में स्थित भगवान् सूर्य तीनों लोकों को तपाते और प्रकाशित करते हैं।

"यन्मध्यगतो भगवांस्तपताम्पतिस्तपन आतपेन त्रिलोकी प्रतपत्यवभासयत्यात्मभासा।"

वे भगवान् सूर्य उत्तरायण, दक्षिणायन, विषुवत् नाम वाली क्रमशः मन्द, शीघ्र, सम गतियों से चलते हुए मकरादि राशियों में ऊंचे, नीचे, सम स्थानों में क्रमपूर्वक जा कर दिन को बड़ा, छोटा, समान करते रहते ."उत्तरायण का सूर्य तपन कारक है। दक्षिणायन का सूर्य शीतकारक है।

जब सूर्य भगवान् मेष या तुला राशि पर आते हैं, तब दिन एवं रात समान होते हैं.. जब वृषभादि पांच राशियों में चलते हैं तब प्रतिमास रात्रियों में एक–एक घटी की कमी होती जाती है तथा उसी अनुपात में दिन बढ़ते जाते हैं जब वृश्चिकादि पाँच राशियों भगवान् सूर्य चलते हैं तब दिन और रात्रियों में इसके विपरीत (रात्रियों में एक–एक घटी की वृद्धि तथा दिनों में एक–एक घटी का ह्रास) परिवर्तन होता है। "इस प्रकार दक्षिणायण आरंभ होते तक दिन बढ़ते रहते हैं तथा उत्तरायण लगने तक रात्रियाँ बढ़ती रहती हैं. ।सूर्य जिस मार्ग पर चलता हुआ प्रतीत होता है उसे राशि चक्र/नक्षत्र वीथी कहते हैं। इसमें २७ नक्षत्रों की 27 संधियों होती है अथवा, 12 राशियों की 12 संधियों होती है। इसमें नक्षत्रों एवं राशियों की 3गण्डमूल संधियां होती है। इस संधियों को गाँठ कहते हैं। दो खण्डों का जोड़ गांठ होता है। इसे पर्व कहते हैं (पर्व =ग्रन्थिं)। पर्व युक्त होने से राशिपरिपथ को पर्वत भी कहते हैं। श्री मद् भागवत महापुराण में इस परिपथ को मानसोत्तर पर्वत कहते हैं। मानसोत्तर = मान +सोत्तर सोत्तर उत्तर उत्तर = उत् + तर।

यह पथ ऊपर आकाश में होने से उतू (श्रेष्ठ) है। इस पथ को सूर्यादि पह पार कर करते हैं। अतः यह तर (पार्य) है। श्रेष्ठता एवं पार्यता से युक्त होने के कारण यह पथ सोत्तर है। इस पथ को एक निश्चित माप है। जिससे यह मान युक्त है। इस प्रकार इस का नाम मानसोत्तर पर्वत पड़ा है। सूर्य इस पथ पर एक अहोरात्र में चल लेता है। यह परिक्रमा मार्ग नौ करोड़ इक्यावन लाख योजन ष्उस मेरु पर्वत के पूर्व की ओर इन्द्र की देवधानी, दक्षिण में यमराज की संयमनी, पश्चिम में वरुण की निम्लोचनी और उत्तर में चन्द्रमा की विभावरी नाम की पुरियों है.। इन पुरियों में मेरु के चारों ओर समय–समय पर सूर्योदय, मध्याह, सायंकाल एवं अर्धरात्रि होती रहती. है, इन्हीं के कारण सभी जीवों में प्रवृत्ति निवृत्ति है... ष्एक अहोरात्र वा ६० घटी में सूर्य द्वारा तय की गयी दूरी = 9,5100000 योजन।

इसलिये, 1 घटी में सूर्य द्वारा तय की गई दूरी =9,5100000×15/60 = 9,5100000× 1/4 = 2,37,75000 योजन। सूर्य देव जब इन्द्रपुरी से यमपुरी (पूर्वदिशा से दक्षिण दिशा) को चलते हैं, तब 15 घटी में सवा दो करोड़ (2,25,000000) तथा साढ़े बारह लाख (1250000) योजन से अधिक दूरी चलते हैं श्यदा चौन्द्रयाः पुर्याः प्रचलते पञ्चदशघटिकाभिः याम्यां सपाद कोटिद्वयं (2,25,00,000) योजनानां सार्धद्वादश लक्षाणि (12,50,000) साधिकानि (00,25000) चोपयाति।" 2,2500000+12,500000+कुछ अधिक (अर्थात् 00,25000) = 23775000 योजन। इस प्रकार इन्द्र पुरी से यमपुरी तक की दूरी =2 करोड़ 37 लाख 75 हजार योजन। इतनी ही दूरी यमपुरी से वरुण पुरी तक, वरुणपुरी से चन्द्रमा की पुरी तक तथा चन्द्रपुरी से इन्द्रपुरी तक की है।

सूर्य का रथ (पिण्ड) एक मुहूर्त में 34 लाख 8 सौ योजन चलता है। इस प्रकार यह वेदमय रथ चारों पुरियों का चक्कर लगाता रहता है। यहाँ 1 मुहूर्त का मान 28 घटी से कुछ कम है=२७. 4098/4251 घटी सूर्य की गति 2 हजार दो सौ योजन प्रति क्षण है। ये 9 करोड़ 51 लाख योजन के परिपथ को इसी गति से तय करते हैं यहाँ 1 क्षण =11/16004 मुहूर्त अथवा 1 मुहूर्त =1545/11 क्षण सूर्य का देदीप्यमानपिण्ड 36 लाख योजन की परिधि वाला है। सूर्यपिण्ड अरुणवर्ग का है। इसमें सप्तवर्णात्मक किरणें (हव/ अश्व/छन्द) है। उदीयमान एवं अस्तमान सूर्य अरुण वर्ण का होता है–सूर्य के आगे 60 हजार सूक्ष्माकार बालखिल्यादि अषि निरनतर स्वास्तिवाचन करते रहते हैं।

यहाँ 60 हजार बालखिल्यादि ऋषि=60 की संख्या के अनन्त चक्र यथा, 60 वर्ष =1 चक्र। 60 दिन=1 ऋतु। 60 घटि=1 अहोरात्र। 60 अंश =1 अर। 60 कला=1 अंश। 60 विकला=1 कला। 60 प्रतिकला =1 विकला। 60 तत्प्रतिविकला=1 प्रतिविकला। 1 घटि = 60 पल। 1 पल = 60 विपल। 1 विपल =60 अनुपल। 1 घंटा = 60 मिनट। 1 मिनट = 60 सेकेण्ड। 1 अंगुल = 60 व्यंगुल। इस प्रकार प्रयोग में 60 के चक्र का कोई अन्त नहीं है। श्रीमद्भागवत में सूर्य सम्बन्धी जो कुछ ज्ञान है वह अत्यंत गूढ़ है सूक्ष्म है। अधिकारी भेद से यह प्रकट होता है। इसे समझना तथा समझाना दोनों कठिन है। इसके लिये मैं सूर्य से प्रार्थना करता हूँ।

"हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत् त्वं पूषन् अपावृण सत्यधर्माय दृष्टये ।।"[16]

जिस भाव में सूर्य रहता है, वह भाव ऊर्ध्व मुख कहलाता है। जिस भाव में चन्द्रादि मह रहते हैं वह भाव तिर्यङ्मुख होता है। जिस भाव में कोई यह नहीं रहता, वह अधोमुख होता है। इससे स्पष्ट है–सूर्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है यह सुगन्धि (कीर्ति) का विस्तार करता है, यश और प्रतिष्ठा देता है, सम्मान बढ़ाता है, स्वाभिमान का द्योतन करता है। दशमस्थ बलवान् सूर्य जातक को राजसत्ता से जोड़ता है। यह सूर्य न कभी अस्त होता है, न उदय होता है। उसको, जब छिपता है–ऐसा मानते हैं, तब वह दिन का अन्त करके अपने को दूसरी ओर दिखलाता है। इधर रात्रि करता है दूसरी ओर दिन। और जब उसको प्रातः काल उदय होता है ऐसा मानते हैं, तब वह रात का अन्त करके अपने को विरीत दिखलाता है। इधर दिन करता है और दूसरी ओर रात पर वह कभी छिपता या निकलता नहीं, वह कभी भी छिपता नहीं निकलता नहीं।

"स वा एष न कदाचनास्तमेति, नोदेति।
तं यदस्तमेतीति मन्यन्तेऽन्हमेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते ।।
रात्रीमेवावस्तात् कुरुतेऽहः परस्ताम् ।।
अथ यदेनं प्रातरुदेतीतिमन्यन्ते । रात्रेरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते ।।
हरेवावस्तात् कुरुते रात्रिं परस्तात् ।
स वा एष न कदाचन नि–प्रोचति न ह वै कदाचन नि–प्रोचति।। "[17]

इस महान् सत्य का साक्षात्कार ऋषियों ने किया था। आधुनिक वैज्ञानिक ऐतरेय ब्राह्मण के इस कथन को पढ़ कर हतप्रभ हो जाते हैं। हमें अपने पूर्वजों के इस ज्ञान पर गर्व है। मैं अपनी इस ज्ञान परम्परा के सामने श्रद्धा से सिर झुकाता हूँ। सूर्य के गुण धर्म–उप स्वभाव, क्षत्रियवर्ग, प्रौढ़वय, चतुरस आकार, ऊर्ध्वदृष्टि, कटु स्वाद, मोटा व रक्तस्याम रंग, देव स्थान, ताम्र खनिज, सत्व गुण, अग्नि तत्व, पुंलिंग, पित्त प्रकृति, मध्यम शरीर, शहद समान नेत्र, अल्पकेश, श्रेष्ठ रूप, शुष्क– स्थिर मति, अस्थि धातु, दक्षिण पार्श्व, आशीर्षमुख प्रभाव, दक्षिण नेत्र, पित्तरोग, मध्याह्नकाल वली, दशमभाववली, पशुभूमि, वनस्थान, पर्वत वास, ग्रीष्म अतु, पूर्वदिशा, अयन (6 मास) समय, काष्ठ चतुष्पद व्रण, पाप ग्रह, शिव–देवता, राजा पदवी, आत्म कारक, पितास्वरूप, गौरिक दीप्ति, वैद्यक शास्त्र, व्याकरण विद्या, कीर्तिविजय– सम्मान–पद–प्रदाता । भीतर से दृढ़ एवं ऊंचा वृक्ष वृक्ष–मूल।

- मित्र ग्रह चन्द्र मंगल गुरु।
- सम ग्रह– बुध।
- शत्रु ग्रह शुक्र शनि राहु ।
- एक पाद दृष्टि– 3/10
- द्विपाद दृष्टि 5, 9
- त्रिपाद दृष्टि– 4/8
- चतुष्पाद (सम्पूर्ण) दृष्टि 7
- कारक भाव– 1/9/10
- हर्षस्थान– 9

- भाग्योदय वर्ष, 22
- प्रभाव वर्ष 50
- राशि चक्र परिभ्रमण वर्ष –1
- मध्यम राशि भ्रमण काल– 1 मास।
- नक्षत्र चार समय–13 दिन ।
- दीप्तांश–15।
- दैनिक मध्यम गति–59', 8" ।
- शीघ्र गति – 60, 4" ।
- परमशीघ्र गति –61' ।
- गोचर से निन्द्य स्थान– 4/8/12
- गोचर से पूज्य स्थान– 1/2/5/7/9
- गोचर से शुद्ध स्थान– 3/6/10/11
- बलवत्तम भाव, 10
- स्वगृह राशि–5
- अस्त राशि – 11
- उच्च राशि एवं परमोच्चांश मेष 10°।
- नीच राशि एवं परमनीचाश– तुला 10°।
- मूलत्रिकोण राश्यंश सिंह 20°।
- मित्र राशि– 1,4,8,9,12
- शत्रु राशि– 2,7,10,11
- सम राशि–3,6
- स्वराशि–5
- चेष्टावली राशि–10, 11, 12, 9, 2 ,3
- राशिचार फल–प्रवेशारंभ।

सूर्य मेष राशि के दशवें अंश में परमोच्च होता है इस कथन के सन्दर्भ में मैं महाभारत के एक उपाख्यान की चर्चा करता हूँ। विश्वकर्मा की पुत्री का नाम संज्ञा, संज्ञा का विवाह सूर्य से हुआ। एक बार संज्ञा ने अपने पिता के घर जाने के लिये अपने पति सूर्य से अनुमति माँगी। सूर्य ने संज्ञा को नैहर जाने से मना कर दिया। संज्ञा ने एक युक्ति सोची। उसने अपने ही सदृश एक स्त्री बना कर उसे सूर्य के पास छोड़ कर स्वयं पितृ–गृह चली गई। इस स्त्री का नाम छाया था। छाया से सूर्य के द्वारा शनि की उत्पत्ति हुई। दीर्घ अन्तराल के बाद संज्ञा पुनः सूर्य के पास आई। सूर्य ने उसे अस्वीकार कर दिया। तत्पश्चात् वह अश्विनी (घोड़ी) का रूप धारण कर लोक लोकान्तरों में विचरण करने लगी। सूर्य को जब मालूम हुआ कि वह मेरी ही पत्नी है तो उन्हों ने उसे पुनः स्वीकार किया। अश्विनी से सूर्य के द्वारा यमल संताने उत्पन्न हुई। इसे अश्विनीकुमार कहते हैं। एक का नाम नासत्य और दूसरे का दस्र है। ये दोनों साथ–साथ रहते हैं तथा ये देवताओं के वैद्य (चिकित्सक) है।

जो अश्विनी नाम की अश्विनीकुमारी की जननी वा सूर्य की पत्नी है, वही है अश्विनी नक्षत्र यह राशि चक्र का प्रथम नक्षत्र है। इस नक्षत्र में सूर्य उच्च का होता है। उच्च से तात्पर्य है, उत्साह सम्पन्न, वीर्यवान्। लोक में यह देखा जाता है कि व्यक्ति (पुरुष) स्त्री को प्राप्त कर उत्साहित होता है, उसका वीर्य चलायमान हो जाता है, उसमें बल वृद्धि होती है। अश्विनी नक्षत्र केतु का है। केतु का अर्थ है–किरण। 'सूर्य केतवः" अथर्व वेद। निष्कर्षतः अश्विनी नक्षत्र में आते ही सूर्य किरणवान् (अधिक उष्णता वाला) हो जाता है। अश्विनी नक्षत्र का मान 13° अंश 20° कला है। सूर्य अश्विनी के १०° अंश में परमोच्च का है। अश्विनी का प्रथमपाद 3°2,° द्वितीय पाद 6° 40° तृतीय पाद 10° तथा चतुर्थपाद 13° 20° तक है। तीसरा पाद प्रौढ़ पाद है। (बाल युवा प्रौढ़ जरा पाद क्रमानुसार) प्रौढ़ता परिपक्वता का प्रतीक है। सूर्य का प्रौढ़ होना, ज्ञान का परिपाक है।

सूर्य की पत्नी संज्ञा है। इसका अर्थ है–सम्–ज्ञा अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान पर सूर्य का आधिपत्य है। सूर्य की पत्नी का नाम छाया है। छाया प्रकाश का अभाव। इसका तात्पर्य है–अज्ञान पर सूर्य का वर्चस्व है। सूर्य की पत्नी है–अश्विनी। अश्व = किरण, गति। अश्विनी किरणायुक्त, गतिशील। इसका = अर्थ हुआ–प्रकाशयुक्त एवं गतिशील जितने भी पिण्ड हैं वे सब सूर्य द्वारा शासित पोषित हैं।

सूर्य+ संज्ञा के योग से यम यमी संतानें उत्पन्न हुई। यम अर्थात् यमन करने वा मारने वाला तथा यमी = कालिन्दी (यमुना) गहरा होने से यमुना का जल नीला है। इससे निष्कर्ष निकला सूर्य शासक है। तथा जल देने वाला है (वर्षा कारक)। सूर्य+छाया के योग से सावर्णि–शनि दो पुत्र एवं तपनी नाम की कन्या हुई। सावर्णि = एकरूपता, आठवें मन्वन्तर का स्वामी शनि शुष्क। तपनी उष्मा, धूप। इससे निष्कर्ष निकलता है–सूर्य सदा सर्वदा एकरूप है, स्थिर है, स्थिर स्वभाव वाला है। सूर्य सबको सुखा कर बलहीन कर देता है। यह इसका शनित्व है। सबको अपनी प्रखर किरणों से तपाता है पीड़ा देता है। सूर्य उष्मावान् है।

सूर्य + अश्विनी के योग से दो अश्विनी कुमार पैदा हुए। कथा है, अश्विनी कुमारों ने च्यवन मुनि की आँखें ठीक कर दी। ये देव वैद्य हैं। औषधि शास्त्र के ज्ञाता हैं। इन सबका भाव है– आँखों में जो ज्योति है वह सूर्य से है। सूर्य खोई हुई दृष्टि को पुनः वापस देता है। आयुर्वेद, शल्य शास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, औषधि निर्माण का कारक सूर्य है। बलवान् सूर्य वाले जातक वैद्य, शल्यक, चिकित्सक, भिषक् होते हैं। अश्विनी कुमार रूपवान् हैं। इसलिये ऐसे जातक सुन्दर रूप पाते हैं।

कुन्ती ने कौमार्यावस्था में सूर्य का आवाहन किया। सूर्य ने उसे रतिदान दिया। उससे कर्ण नामक पैदा हुआ। कर्ण अमित पराक्रमी था। कर्ण दानवीर था। उस काल का वह अप्रतिम दानी था। इस पुत्र आख्यान का सार है–सूर्य प्रभावित कुण्डलियों वाले जातक संभोग प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं। धर्मानुकूल रति करते हैं। अत्यन्त पराक्रमी शूर वीर होते हैं। दान में इनकी समता करने वाला कोई नहीं होता। दृढ़ प्रतिज्ञ होते हैं। क्रूर कर्मा होते हैं। विश्वसनीय होते हैं। अंतिम साँस तक अपने मित्र का साथ देते हैं। अकृतघ्न होते हैं। स्पष्टवादी होते हैं। कुन्ती पुत्र कर्ण के चरित्र में जो कुछ है, वह सब सूर्य शासित कुण्डली वाले जातक में होता है।

सूर्य अध्यात्म विद्या और व्याकरण शास्त्र का कारक है। इस विषय में पौराणिक कथा है। हनुमान् जी के गुरु सूर्य हैं। सूर्य के सामने प्रस्थित होकर सूर्य के रथ की गति से चलते हुए मारुति नन्दन हनुमान् ने वेद–वेदांग, शास्त्र एवं उपनिषदों का अध्ययन किया। व्याकरण शास्त्र में विशेष योग्यता प्राप्त की। बाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान् जी शुद्ध एवं परिमार्जित शास्त्रीय संस्कृत में बोलते थे। हनुमान् जी जैसा संस्कृत वक्ता त्रिलोक में कोई नहीं है। सूर्य पुष्टिवर्धक है। हड्डी का कारक होने से शरीर को दृष्ट पुष्ट बनाता है। लग्न भाव का कारक होने से शरीर का यह प्रतीक है। जैसा सूर्य होगा वैसा शरीर होगा। सूर्य देवो ज्ञान का दाता है। आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये सूर्य की उपासना की जाती है। अपनी दशान्तर्दशा वा गोचर में जब सूर्य अशुभ फल दे रहा हो तो उसकी शांति के लिये दान व्रत जप करना चाहिये।

- दानद्रव्य– माणिक, सोना, तांबा, गेहूँ, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, मूंगा, केशर, लाल गऊ, लाल चन्दन, लाल कम्बल
- दान का समय–अरुणोदय सूर्योदय काल।
- दान का दिन रविवार वा रवि की होरा।
- जप मंत्र–सूर्याय नमः।
- समिधा–मदार।
- धारणा रत्न माणिक्य सोने की अंगूठी में रवि–पुण्ययोग में।
- उपरत्न– विद्रुम लाल तामड़ा मध्याह्न में।

- धारणार्थ जड़ी–बिल्वमूल। जड़ी धारण का फल रत्न के समान होता है।
- पुष्यार्क योग में धारण करने से पूर्व तत्संबंधी पूजनादि क्रिया सम्पन्न कर लेनी चाहिये। लालरंग के डोरे में बाँध कर पुरुष अपनी दाहिनी भुजा में पहने तथा स्त्री गले में सविधि धारण करने पर फल तत्काल से ही मिलना प्रारंभ हो जाता है। एक मंत्र है.।

"तस्याम् सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह।"[18]

चन्द्रमा सहित सभी नक्षत्र सूर्य के वश में हैं।
इसका अर्थ है–सूर्य द्युति पति है। सूर्य के अस्त होने पर ही चन्द्रमा एवं नक्षत्रादि पिण्ड दिखायी देते हैं, उदय होने पर अदृश्य हो जाते हैं। मन्त्र का भाव है–जिसकी कुण्डली में बलवान् सूर्य है, वह जातक शासित होना नहीं चाहता, शासक बनना चाहता है और होता भी है। वह जातक स्वानुशासित होता है। सूर्य सबका परोक्ष रक्षक है। सूर्य दैव है। कवि कहता है।

"अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथो विपिनेऽप्यरक्षितः कृतप्रयत्नोऽपि गृहे विनश्यति ।।"

जिसका कोई रक्षक नहीं है, उसकी रक्षा सूर्य करता है। जो किसी के द्वारा रक्षित है, उसको सूर्य मार डालता है। जंगल में अनाथ जीवित रहता है, जबकि घर में रक्षा हेतु यत्नवान् मृत्यु को प्राप्त होता है। सूर्य अदृष्ट प्रेरक है। अदृष्ट = भाग्य। अदृष्ट का प्रेरक दैव दैव और भाग्य में यहीं अन्तर है। सूर्य देव बोधक है, शनि भाग्य कारक है। कर में सूर्य रेखा के अभाव में शनि (भाग्य) रेख फलीभूत नहीं होती। अदृष्ट प्रेरक होने से सूर्य को सविता कहते हैं।

"स एति सविता स्वर्दिवस्पृष्ठेऽव चाकशत् ।"[19]

सूर्य आत्मा है। आत्मा कर्माध्यक्ष है, कर्ता नहीं। जीव कर्ता भोक्ता है। जीव स्वकर्मवश सुख दुःख पाता है। "मैं करता हूँ"–ऐसा कहना उचित नहीं। कर्म ही कर्म को करा रहा है। पूर्वजन्मजन्मान्तरों के कर्म संस्कार मुझसे लिखवा रहे हैं। तत्ववेत्ता कहता है।
सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददादीति कुबुद्धिरेषा।। अहं करोमीति वृथामिमानः स्वकर्मसूत्रप्रथितो हि लोकः।।" इसी बात को तुलसी दास दुहराते हैं.। "नहि कोड है सुख दुःख कर दाता। निजकृत कर्म भोग सब भ्राता ॥" मैंने इसी कर्मसूत्र की प्रेरणा से श्रीमद्भागवत गत सूर्य विज्ञान पर दृषि डाला श्री वेदव्यास की विशाल एवं सूक्ष्म बुद्धि का यह कौतुक है। यह सम्पूर्ण रूप से सब के लिये ग्राह्य नहीं है।

"एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां देव पाहि पाहि दिवस्पते ।।"

भट्टनारायण के चमत्कार चिंतामणि में रविभावफल वर्णित है–

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टिं विधत्ते मनः संतपेद्दारदायादिवर्गात् ।
वपुः पीड्यते वातपित्तेन नित्यं स वै पर्यटन हासवृद्धि प्रयाति।।[20]

तनु आदि भावों का सूर्य आदि ग्रहों के योग से फल कहते है–
जिस मनुष्य के जन्म के समय सूर्य लग्न में हो, वह पुरुप उच्च स्वरूप (अर्थात् लम्बे शरीर) वाला होता है और उसक। स्त्री पुत्र आदि कुटुंबियों से क्लेश रहता है। वात व पित्त ग उसका शरीर नित्य पीड़ित रहता है और वह देशांतरों में फिरता हुआ उन्नति और अवनति को प्राप्त होता है अर्थात् उसका ऐश्वर्य कभी घटता है और कभी बढ़ता है। 1 ॥

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्या– चतुष्पात्सुखं सव्यये स्वं च याति ।
कुटम्बे कलिर्जायया जायते ऽपि क्रिया निष्फला याति लाभस्य हेतोः ।।[21]

जिसके लग्न से दूसरे स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य अधिक भाग्यवाला, चौपायों (घोड़ा आदि) से सुखी, धर्म आदि शुभ कार्यों में खर्च करनेवाला होता है। कुटुम्ब तथा स्त्री के साथ उसकी कलह रहती है और लाभ के लिये किया हुआ उसका उद्योग निष्फल होता है।

तृतीये यदाऽहमणिर्जन्मकाले प्रतापाधिकं विक्रमं चातनोति ।
तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी सदाऽरिक्षयः संगरे शं नरेशात् ।।[22]

जिस मनुष्य के लग्न से तीसरे सूर्य हो, वह पुरुष अधिक प्रतापशाली और पराक्रम का करनेवाला, सहोदर भ्राताओं से कष्ट पानेवाला, तीर्थों की यात्रा करनेवाला, युद्ध में शत्रुओं का संहार करनेवाला और राजा से सम्मान पाने–वाला होता है।

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी जनः संलभेदिग्रहं बन्धुतोऽपि ।
प्रवासी विपक्षाहवे मानभंगं कदाचिन्न शान्तं भवेत्तस्य चेतः ।।[23]

जिसके लग्न से चौथे सूर्य हो, वह मनुष्य अति शोभा का अधिकारी होता है, बन्धुओं से विरोध प्राप्त करता है, सदा विदेश में रहता है और युद्ध में शत्रुओं से उसका मान भंग होता है। उसका चित्त कभी भी शांति को प्राप्त नहीं होता।

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापो कुशाग्रा मतिर्भास्करे मन्त्रविद्या ।
रतिर्वश्च्चने संचकोऽपि प्रमादी मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया।।[24]

जिसके सुतस्थान अर्थात् पंचम स्थान में सूर्य हो, वह पुरुष प्रथम संतान के शोक से कष्ट पानेवाला, कुशा के अग्र भाग के तुल्य तीक्ष्ण बुद्धिवाला अर्थात् महाबुद्धिमान, मंत्र विद्या का जाननेवाला, ठगाई करनेवाला, प्रमादी, और द्रव्य का संचयी होता है और उसकी मृत्यु उदररोग आदि से होती है, ऐसा जानना चाहिए।

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा ।
कुले मातुरापच्चतुष्पादतो वा प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति।।[25]

जिसके छठे स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य रिपुओं का नाश करनेवाला और राजदंड के निमित्त व मित्रों के कार्य के हेतु द्रव्य खर्च करनेवाला होता है तथा यात्रा में मार्ग के मध्य भीलों (जंगली मनुष्यों) से दुःख पानेवाला अर्थात् मार्ग में भीलों से अपना द्रव्य लुटने पर दुःख को प्राप्त होता है और मातृकुल में घोड़ा आदि से गिर पड़ने से विपत्ति को प्राप्त होता है। ख्यहाँ मूल में श्कुले की जगह कुलात्श पाठ करने से माता के कुल से वित्ति, अश्वादि से गिरना अथवा शृङ्गी पशु से विदीर्ण होना इत्यादि कष्ट कहना चाहिए।

द्यनाथो यदा द्यनजातो नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता ।
भवेत्तच्छलब्धिः क्रये विक्रयेऽपि प्रतिस्पर्धया नैति निद्रां कदाचित्।।[26]

जिसके सप्तम स्थान में सूर्य होवे, उसको स्त्री की तरफ से दुःख रहता है और शरीर में पीड़ा, चिन्ता, मन की व्याकुलता होती है। बेचने–खरीदने के व्यवहार में स्वल्प लाभ होता है।ईर्षा–विरोध के कारण रात्रि को निद्रा भी नहीं आती है, अर्थात् मनुष्यों के साथ उसका अत्यन्त द्वेष रहता है।

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं विदेशीयदारान् भजेद्राऽप्यवस्तु । वसुक्षीणता दस्युतो वा विलम्बा–द्विपद् गुह्यता भानुरुग्रं विधत्ते।।[27]

जिसके अष्टम स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य व्यवहार में अत्यन्त धूर्त होता है और स्वयं कष्टयुक्त रहता है। वह विदेशी स्त्रियों से स्नेह करता है और न खाने योग्य चीजों को खाता है। चोरों से और आलस्य से उसका द्रव्य क्षीण होता है और परस्त्रीगमन आदि से सुजाक आदि की बीमारी प्रायः हुआ करती है।

दिवानायके दुष्टता कोणयाते न चाप्नोति चिन्ताविरामं च चेतः । तपश्चर्यया ऽनिच्छयाऽपि प्रयाति क्रियातुंगतां तप्यते सोदरेण ।।[28]

जिस मनुष्य के नवम स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य बेमन किये हुए तप के फल को भी प्राप्त करता है अर्थात् दंभ से किये हुए तप से जगत में पुजने लग जाता है, उसको सहोदर भ्राता से क्लेश रहता है और दुष्टता के कारण परद्रोह रखने से उसके चित्त को कभी शान्ति नहीं प्राप्त होती है अर्थात् आठों पहर इसके चित्त में चिता बनी रहती।

प्रयातोंऽशुमान् यस्य मेषणे ऽस्य श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यो नरस्य। जनन्यास्तथा यातनामातनोति संक्रमेद्रल्लभैविप्रयोगः।।[29]

जिसके दशवें स्थान में सूर्य विद्यमान हो उसकी माता करे रोगों से उत्पन्न होनेवाला क्लेश पैदा करता है। उस– का पराक्रम राजा के तुल्य सिद्धि का करनेवाला होता है अर्थात् उसके सम्पूर्ण प्रयोजनों की सिद्धि करनेवाला होता है और उसे प्रिय मित्र, पुत्र, कलन आदि से वियोग होने के कारण सदा ग्लानि रहती है।

खौ संजभेत्स्वं च लाभोपयाते राजमुद्राधिकारात् । नृपद्वारतो प्रतापानले शत्रवः संपतन्ति श्रियोऽनेकधा दुःखमंगोद्भवानाम्।।[30]

जिसके ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो, वह मनुष्य राजा के दिये हुए द्रव्य को प्राप्त करता है और राजा के हुक्म से हाथी घोड़ा आदि अनेक प्रकार की संपत्ति का लाभ करता है और उसकी प्रतापरूप अग्नि से शत्रु जलते हैं अर्थात् उसके उत्तम अधिकार को देखकर शत्रु जलते रहते हैं परन्तु उसको संतति का दुःख रहता है।

रविर्दादशे नेत्ररोगं करोति विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः । स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे।।[31]

जिसके बारहवें स्थान में सूर्य हो उस मनुष्य को मंददृष्टि आदि नेत्रदोष और चचा ताऊ से होनेवाला क्लेश करता है और युद्ध में शत्रुओं से विजय, लाभ की इच्छा से एक जगह स्थिति, शारीरिक पीड़ा का नाश, और मार्ग (रास्ता) में धन की हानि इत्यादि फल करता है। मंत्रेश्वर महाराज ने फलदीपिका में सूर्य के दशाफल का वर्णन किया है।

भानुः करोति कलहं क्षितिपालकोप–माकस्मिकं स्वजनरोगपरिभ्रमं च। अन्योन्यवरमतिदुःसहचित्तकोपं गुप्त्यर्थधान्यसुतदारकृ शानुपीडाम्।।[32]

यदि सूर्य उत्तम स्थान में हो तो क्रूरता से, सफ़र (यात्रा) से, राजाओं द्वारा एवम् कलह से धन प्राप्ति कराता है। मनुष्य बनों में और पहाड़ों में घूमता है, अति प्रसिद्धि प्राप्त हो, जातक सदैव उद्योगशील हो। उसके स्वभाव और कार्य में तीक्ष्णता हो और विजय और सुख प्राप्त हो।

अथ तरणिदशायां क्रौर्यभूपालयुद्धं– र्धनमनलचतुष्पात्पोडनं नेत्रतापः । उदरदशनरोगः पुत्रदारातिरुच्चे–गुरुजनविरहः स्याद्भृत्यनाशोऽयंहानिः ।।[33]

जब सूर्य की दशा हो तो क्रूरता से राजाओं से या युद्ध से धन प्राप्ति हो। अग्नि से और चौपायों से पीड़ा हो। आँखों में ताप (जलन) हो। पेट के तथा दांत के रोग हों। पुत्र और स्त्री को बीमारी हो या अन्य प्रकार का कष्ट हो । नौकरों का नाश हो, बन की हानि हो और गुरुजन (पिता, चाचा आदि) का वियोग या विरह हो । इस श्लोक में सूर्य की दशा का अनिष्ट फल बताया गया है। यह तभी घटित होगा जब सूर्य बिगड़ा हुआ हो । प्रत्येक ग्रह सम्बन्धी कुछ विशेष बातें हैं। जब ग्रह बिगड़ा हुआ होता है तो जिन बस्तुओं का वह अधिष्ठाता है उनसे सम्बन्धी अनिष्ट फल दिखाता है और जब ग्रह सुधरा हुआ होता है तो अपने से सम्बन्धित वस्तुओं का लाभ कराता है।

सन्दर्भ

1. होरासार 2/33
2. बृहज्जातक 2/8
3. सारावली 4/28
4. फलदीपिका 2/8
5. जातक पारिजात 2/53
6. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड 23
7. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड 24
8. उत्तरकालामृत कारकत्व खण्ड 25
9. ताजिकनीलकंठी ग्रहस्वरूप 7
10. बृहज्जातक 2/8
11. सारावली 4/28 ।।
12. सारावली 8/7
13. फलदीपिका 2/8
14. जातक पारिजात 2/53
15. ताजिकनीलकंठी ग्रहस्वरूप।
16. ईशावास्योपनिषद् 15
17. ऐतरेय ब्राह्मण 3/4/6
18. अथर्व 13/14/28
19. अथर्व 13/4/19
20. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 1
21. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 2
22. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 3
23. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 4
24. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 5
25. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 6
26. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 7
27. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 8
28. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 9
29. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 10
30. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 11
31. चमत्कार चिंतामणि रविभावफल 12
32. फलदीपिका 19/5
33. फलदीपिका 19/18